''काव्य में रीति या ध्वनि की महत्ता''

शोध निर्देशिका
प्रो0 संध्या शर्मा
आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम
महिला महाविद्यालय, हर्ष नगर,
कानपुर

शोधार्थी
अर्पित कुमार
रजि0नं0 PHD202300000200
आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम
महिला महाविद्यालय, हर्ष नगर,
कानपुर

काव्य में रीति या ध्वनि किसकी महत्तता को माना जाए इस प्रश्न पर भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न विद्वानों में मतभेद रहा है और अनेक रसवादी आचार्य भरतमुनि, धनंजय, विश्वनाथ आदि विद्वानों ने जहाँ रस को कविता में सर्वाधिक महत्व दिया वही अलंकार वादी आचार्यो में शायद दण्डी उद्भट रूद्रट ने अलंकार को ही काव्य में अधिक महत्व दिया। आचार्य वामन ने रीति सम्प्रदाय की स्थापना करते हुए सर्वप्रथम रीति को काव्य की आत्मा माना ''रीति रात्मा काव्यस्य रीति शब्द 'रीड' धातु से क्ति प्रत्यय लगा देने पर बनता है इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, प्रणाली या मार्ग है परन्तु वर्तमान में शैली के रूप में यह अधिक समाह्त है। रीति सम्प्रदाय में रीति का अर्थ लगभग वैसा ही है जैसा अंग्रेजी साहित्य में (Style) शैली का है। अतः ''विशिष्ट पद रचना रीतिः'' जो सामान्य नही है वही विशिष्ट है। अर्थात् जो सामान्य जीवन में सहज रूप से प्राप्त नहीं है। वही विशिष्ट है और जो विशिष्ट है उसी में रीति

बनाने की संभावना रहती है। काव्य भाषा पद रचना विशेष होती है। इसी से उसमें रीति की सम्भावना होती है।

रीति सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य वामन है जिन्होंने अपनी कृति 'काव्यालंकार सूत्र' में रीति को स्पष्ट शब्दों में काव्य की आत्मा माना है। (रीतिरात्मा काव्यस्य) वामन काव्य शास्त्र में रीति सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। काव्यालंकार सूत्र मूलतः सूत्रों में रचित है। अतः उसको अधिकाधिक सुबोध बनाने के लिये स्वयं आचार्य वामन ने ही 'कवि प्रिया' नाम से एक भाष्य भी लिखा।

वामन काव्य का आधार रीति को और रीति का आधार गुण को मानते है ''विशेषों गुणात्मा''। उनके अनुसार काव्य के शोभा कारक धर्म ही गुण कहलाते है। 'काव्य शोभाया' कतारो धर्मा गुणां अतः वामन के अनुसार 'गुण' ही काव्य का सर्वोत्कृष्ट तत्व सिद्ध होता है। उदाहरण देते हुए वामन कहते हैं कि जिस तरह सुन्दर स्त्री की काया में यौवन रहता है उसी प्रकार कविता में गुण रहता है।

ध्वनि– आचार्य आनंदवर्धन के अनुसार – जहाँ प्रत्यक्ष अर्थ में कोई दूसरा ही अर्थ प्रकट हो और वह नया अर्थ उसके प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार पूर्ण हो उसे ध्वनि कहते है।

ध्वनि के भेद – रस ध्वनि, अलंकार ध्वनि और वस्तु ध्वनि। रस ध्वनि के अन्तर्गत रस की व्यंजना, अलंकार ध्वनि के अन्तर्गत अलंकारों की व्यंजना और

वस्तु ध्वनि में विषय की व्यंजना सम्मिलित है। इन तीनों में रस ध्वनि को सर्वश्रेष्ठ माना।

मुख्य रूप से ध्वनि के दो भेद किए गए है। अभिधामूलक ध्वनि और लक्षणा मूलक ध्वनि अभिधामूलक ध्वनि के दो भेद माने जाते है। असंल्क्ष्य क्रम ध्वनि तथा संलक्ष्य क्रम ध्वनि अर्थात् वाच्यार्थ के साथ व्यंग्यार्थ के भाव को असंल्क्ष्य ध्वनि कहते है। इन दो के मध्य जब अंतर का बोध हो तो उसे संलक्ष्य ध्वनि कहते है। असंलक्ष्य क्रम के भी छः भेद माने गए है। पदगत, पदांशगत, वाक्यगत, वर्णगत रचनागत तथा प्रवधगत। संलक्ष्य क्रम ध्वनि के तीन भेद है। शब्दशक्त्युदभव, अर्थशक्त्युद्भव, शब्दार्थोभयशक्त्युदभव वामन चित्रकला और पेंटिग के प्रेमी थे उनके अनुसार रीति के भीतर काव्य वैसे ही समाहित हो जाता है जैसे रेखाओं के भीतर चित्र रीतियों रेखाओं की तरह होती है। काव्य और काव्य पेंटिंग की तरह। जैसे पेटिंग में रेखाएं नहीं दिखती उसी तरह काव्य में रीतियाँ नहीं दिखाई देती वो उसमें अंर्निहित होती है। वामन से पूर्व आचार्य दण्डी ने दो रीतियाँ मानी थी, ''वैदर्भी'' और 'गौड़ी' वामन ने तीन प्रकार की चर्चा की है काव्य में दी है।

1. **वैदर्भी रीति** – इसमें माधुर्य व्यंजक वर्णों की योजना की जाती है जो श्रृतिमधुर एवं संगीतात्मक होते है। ललित पठयोजना के कारण यह श्रृंगार करूण हास्य रसों की अभिव्यक्ति में सहायक होती है। आचार्य वामन ने इसमें श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओज कान्ति और समाधि इन दस गुणों का समावेश माना है।

वैदर्भी रीति से मुक्त बिहारी का दोहा प्रस्तुत है–

''रस सिंगार मज्जनु किए कंजनु भजुन दैन

अंजन रंजनु हूं बिना खंजनु गंजनु नैन''

2. **गौड़ी रीति**– गौड़ी रीति में ओज पूर्ण वर्णों की योजना की जाती है। यह 'ओज' और कान्ति गुणों से युक्त होती है। इसमें संयुक्त व्यंजन, ट वर्ग श, ष आदि वर्णों के कारण यह रीति वीर वीभत्स रौद्र और भयानक रसों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। वीर एवं रौद्र रसो का यह मूल आधार है। इसमें दीर्घ सामासिक पदों का प्रयोग किया जाता है। सौकुमार्य (कोमलता) एवं माधुर्य गुणों का अभाव होने से इसे परूषावृति भी कहा जाता है।

3. **पांचाली रीति** – माधुर्य और सौकुमार्य गुणों से युक्त शिथिल पद वाली वह रचना जिसमें लघु समासों से युक्त रचना का प्रयोग किया जाता है। इसी को पांचाली रीति कहते है। यह वैदभी और गौड़ी के बीच की रीति है। इसकी पद योजना यथा सम्भव कोमलता लिए रहती है। इसलिये मम्मट ने इसे कोमल वृत्ति कहा है। दूसरा मूल गुण प्रसाद होता है।

पदमाकर के निम्न छन्द में पांचाली रीति है

''राति न सुहात न सुहात परभात आली,

जब मन लागि जाति काहू निमोही सौ''

वस्तुतः आचार्य वामन ने वैदर्भी रीति में सभी गुणों का समावेश मानकर और इस प्रकार इसे सर्वगुण सम्पन्न कहकर बहुत बड़ी भूल की है। यह स्थिति काव्य में असम्भव ही है, क्योंकि कोई रचना सर्वगुण सम्पन्न नही हो सकती है। आचार्य वामन की रीति सिद्धान्त में सबसे बड़ी शिथिलता (कमी) यही है।

रीति का खण्डन – रीति सिद्धान्त का खण्डन इसके प्रतिपादन के तुरन्त बाद ही प्रारम्भ हो गया था आचार्य वामन के परवर्ती आचार्यों ने आचार्य वामन द्वारा प्रतिपादित रीति सिद्धान्त का अनुमोदन एवं अनुकरण नहीं किया गई कई आचार्यों ने वामन का उपहास तक किया है।

ध्वनि सिद्धान्त का आधार व्याकरण से सम्बन्धित स्फोटवाद है। काव्य शास्त्रियों ने ध्वनि शब्द व्याकरण के विद्वानों से लिया है। ध्वनि काव्य का सम्बन्ध व्यंजना शब्द शक्ति है। व्यंजना का अर्थ है स्पष्ट करना, खोलना या विकसित करना।

शब्द शक्ति – शब्द और अर्थ के सम्बन्ध को शक्ति कहते हैं दूसरे शब्दों में जिस शक्ति वृत्ति (कार्य) या व्यापार से शब्द में अंतर्निहित अर्थ को व्यक्त करने या समझने में सहायता मिलती है, उसे शब्द शक्ति कहते है।

शब्द शक्तियों के प्रकार– शब्द शक्तियां तीन प्रकार की होती है।

1. अभिधा शब्द शक्ति
2. लक्षणा शब्द शक्ति
3. व्यंजना शब्द शक्ति

1. **अभिधा** – अर्थात शब्द की वह शक्ति जो साक्षात संकेतिक शब्दों का बोध कराती है।

2. **लक्षणा**– मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर जब किसी प्रसिद्ध के कारण कोई अन्य अर्थ प्रकट हो वह लक्षणा शब्द शक्ति है।

   उदाहरण– ''गंगा में घर है।''

3. **व्यंजना शब्द शक्ति**– जब अभिधा और लक्षणा अपने अर्थ का बोध कराकर विरत हो जाती है और उसके बाद नए अर्थ की प्रतीत होती है। वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण– ''चलती चाकी देख कर दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय''

आनंदवर्धन के अनुसार ध्वनि व्यंजना का व्यापार है। अभिधा का उंगली पकड़कर जब आप व्यंजना के उन्मुक्त आकाश में उड़ने लगते है तो वही ध्वनि है। ध्वनि की कोशिश शब्द के सहारे शब्द से परे जाने की होती है। हर प्रकार के काव्य को समाहित करने के लिये आनन्दवर्धन ध्वनि को 51 भागों में बांटते है।

निष्कर्ष – इस प्रकार वामन का तर्क कमजोर पड़ता दिखाई देता है। क्योंकि वो काव्य में सौन्दर्य को प्रमुख घोषित करते हैं और रीति को काव्य की आत्मा काव्य में सौन्दर्य ही साध्य होता है। रीति तो उसका साधन मात्र होता है। उन्होंने साधन को साध्य से भी अधिक महत्व दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने

रीतियों का विभाजन भी ठीक ढंग से नहीं किया। वैदर्थी को दस गुणो वाली तथा शेष को दो–दो गुणों वाली घोषित किया। इस स्थिति में जहॉ दो से लेकर नौ तक गुण हो उसे कौन से रीति में स्थान दिया जाए इसका निर्णय करना भी संभव नही है। वैदर्भी के दस गुणों में भी विरोध है ओज और माधुर्य जैसे विरोधी गुणों को एक स्थान पर कैसे एकत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त रीति केवल काव्य के वाद्य पक्ष या शैली पक्ष का ही व्याख्या प्रस्तुत करता है। जबकि ध्वनि सम्प्रदाय ने रस को सर्वोच्च स्थान देकर तथा रस ध्वनि, अलंकार ध्वनि आदि का भेद बनाकर अपने पूर्व में सभी सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को लगभग अपने में समाहित कर लिया। इस प्रकार से दोनों आचार्यों ने काव्य की आत्मा मानने के सम्बन्ध में अपना–अपना आधार प्रस्तुत किया। लेकिन इस शोध आलेख में दोनों आचार्यों की प्रमुख स्थापनाओं पर गंभीरता से विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया गया कि आनंदवर्धन कि स्थापनाएं और मत अधिक मान्य है। अतः रीति और ध्वनि में से काव्य की आत्मा ध्वनि को ही मानना अधिक उचित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 भगीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2019
2. डॉ0 विवेक शंकर, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
3. गणपति चन्द्र गुप्त भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. डॉ0 तारकनाथ वाली भारतीय काव्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2017
5. वंदना झा काव्यशास्त्र चिंतन के आयाम, अखंड पब्लिकेशन हाउस, 2019
6. डॉ0 उषा, भारतीय काव्यशास्त्र कैलास पुस्तक सदन, भोपाल, 2019
7. पं0 ढुण्ढी राजशास्त्री, शब्द शक्ति प्रकाशित चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस बनारस।
8. आचार्य विश्वेश्वर, काव्य प्रकाश (मम्मट) ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी (1960)
9. डॉ0 सत्यव्रत सिंह, साहित्य दर्पण (श्री विश्वनाथ) चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी (पुनर्मुद्रित संस्करण (2002)
10. डॉ0 एस0के0ड0, वक्रोक्ति जीवित (कुन्तक) 1925
11. प्रोफेसर बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री नाट्य शास्त्र (भरतमुनि)
12. भगीरथ मिश्र, कला साहित्य और समीक्षा भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली 1963

13. डॉ0 कृष्ण कुमार शर्मा, ध्वनि सिद्धान्त अभिनव भारती 42 सम्मेलन मार्ग इलाहाबाद–211003 (1975)

14. डॉ0 राजकिशोर सिंह, आचार्य मम्मट और काव्य प्रकाश डालीगंज रेलवे क्रासिंग सीतापुर रोड लखनऊ–226007

15. योगेन्द्र प्रताप सिंह, भारतीय काव्यशास्त्र लोक भारती प्रकाशन दरबारी बिल्डिंग एम0जी0 रोड इलाहाबाद–1

16. डॉ0 देशराज सिंह भाटी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र अशोक प्रकाशन नई सड़क दिल्ली–6